SANATANODAYA सनातनोदय
ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य और धर्म : श्रीमद्भगवद्गीता का नैतिक दृष्टिकोण

जय कुमार वर्मा

शोधार्थी, वनस्पति विज्ञान, शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय रीवा 486001

ईमेल आईडी: *varmajay03@gmail.com*

सारांश

श्रीमद्भगवद्गीता, एक प्राचीन दार्शनिक ग्रंथ है, आधुनिक राजनीति और धर्म के संदर्भ में गहरे नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह शोध पत्र गीता के नैतिक सिद्धांतों का विश्लेषण करता है और उनके आधुनिक शासन, नैतिक नेतृत्व और धार्मिक समरसता में अनुप्रयोग पर प्रकाश डालता है। गीता के प्रमुख सिद्धांत, जैसे "धर्म" (कर्तव्य), "कर्मयोग" (निःस्वार्थ कर्म) और "निष्काम कर्म" (फल की इच्छा के बिना कर्म), आज की राजनीतिक और धार्मिक जटिलताओं को सुलझाने के लिए एक अमूल्य मार्गदर्शिका प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक राजनीति में, जहाँ नैतिक समस्याएँ और सत्ता के लिए संघर्ष अक्सर जनकल्याण से अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं, वहाँ गीता का संदेश न्यायपूर्ण और नैतिक कार्यों के लिए प्रेरणा देता है। यह नेताओं को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर समाज के हित में कार्य करने की प्रेरणा देता है। साथ ही, "समत्व" (समभाव) का सिद्धांत उन्हें राजनीतिक निर्णयों में संतुलन और निष्पक्षता बनाए रखने का मार्ग दिखाता है। धर्म और राजनीति का आपसी संबंध अक्सर समाज में असंतोष का कारण बनता है। गीता का संदेश "विविधता में एकता" को बढ़ावा देता है, और यह विभिन्न धर्मों के बीच समझ, सम्मान और सहिष्णुता को प्रोत्साहित करता है। इसके सिद्धांत व्यक्तिगत और संस्थागत स्तर पर साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने में मददगार हैं। गीता पर्यावरण संरक्षण, भ्रष्टाचार और असमानता जैसी वैश्विक समस्याओं के समाधान में भी मार्गदर्शन प्रदान करती है। इसके नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण समतामूलक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह शोध पत्र यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि श्रीमद्भगवद्गीता सिर्फ एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक नैतिक और दार्शनिक मार्गदर्शिका है। इसके सिद्धांत आज के समय में नैतिक शासन, सामाजिक सद्भाव और आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक हैं।

कीवर्ड

श्रीमद्भगवद्गीता, धर्म, राजनीतिक, नैतिकता

SANATANODAYA सनातनोदय
ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

परिचय

श्रीमद्भगवद्गीता आधुनिक समाज की उन समस्याओ का समाधान खोजने का प्रयास है, जो नैतिकता, धर्म और राजनीति के क्षेत्र में उभर रही हैं। श्रीमद्भगवद्गीता न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह एक नैतिक और दार्शनिक मार्गदर्शिका भी है, जो हजारों वर्षों से मानवता के लिए जीवन के उच्च मूल्यों का मार्ग प्रशस्त करती आई है। इसका संदेश सार्वभौमिक, शाश्वत और सर्वकालिक है। समकालीन समाज में धर्म और राजनीति का आपसी संबंध अक्सर विवादों, संघर्षों और असंतोष का कारण बनता है। इन दोनों क्षेत्रों का प्रभाव हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऐसे समय में, जब राजनीति में नैतिकता का अभाव और धर्म में कट्टरता बढ़ रही है, गीता का नैतिक दृष्टिकोण इन दोनों को एक समतामूलक दिशा देने में सक्षम है। गीता का संदेश न केवल धर्म और राजनीति के संतुलन को सिखाता है, बल्कि यह हमें एक आदर्श समाज की स्थापना का मार्ग भी दिखाता है। श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्म पर्व का हिस्सा है, जहां भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन को जीवन, धर्म और कर्तव्य की गहरी शिक्षा दी। यह संवाद केवल युद्ध के दौरान अर्जुन की दुविधा को दूर नहीं करता, बल्कि मानव जीवन की उन नैतिक और धार्मिक चुनौतियों का भी समाधान प्रस्तुत करता है, जो आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं। गीता का मूल आधार धर्म है, लेकिन यह इसे सिर्फ पूजा-पाठ या धार्मिक कर्मकांडों तक सीमित नहीं करती। गीता में धर्म का मतलब उन आदर्शों और मूल्यों से है, जो समाज में शांति, न्याय और समृद्धि लाने में सहायक होते हैं। गीता में "निष्काम कर्म," "समभाव," और "स्वधर्म" जैसे सिद्धांत राजनीति और धर्म के क्षेत्र में नैतिकता को सुदृढ़ करने का आधार प्रदान करते हैं।

समकालीन राजनीति में श्रीमद्भगवद्गीता का नैतिक दृष्टिकोण-

वर्तमान राजनीति में नैतिकता की कमी एक गंभीर समस्या बन चुकी है। सत्ता, स्वार्थ, और भ्रष्टाचार के चलते समाज में असमानता, अन्याय, और संघर्ष तेजी से बढ़ रहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता का संदेश राजनीतिक नेताओं को यह सिखाती है कि सत्ता का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित न रहकर समाज की सेवा और कल्याण को प्राथमिकता देना चाहिए।

निष्काम कर्म योग और राजनीति :-

गीता का निष्काम कर्म सिद्धांत जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान करता है, विशेषकर राजनीति में। यह सिद्धांत सिखाता है कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ करना चाहिए, बिना इसके परिणाम की चिंता किए। आज की राजनीति में, जहां स्वार्थ, लाभ और सत्ता की होड़ हावी है, गीता का यह संदेश अत्यधिक प्रासंगिक है। निष्काम कर्म का अर्थ है अपने कर्तव्यों का पालन बिना किसी स्वार्थ या लाभ की अपेक्षा के करना। यदि राजनीतिक नेता इस सिद्धांत को अपनाएं, तो वे समाज के कल्याण को सर्वोपरि रखेंगे। उनके फैसले व्यक्तिगत लाभ, राजनीतिक उद्देश्य या पक्षपात से प्रभावित नहीं होंगे। इससे

राजनीति में न केवल नैतिकता की स्थापना होगी, बल्कि शासन में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व भी सुनिश्चित होगा। आज की राजनीति में भ्रष्टाचार, पक्षपात और स्वार्थपूर्ण नीतियों ने समाज के विकास को गहरी चोट पहुंचाई है। ऐसे माहौल में गीता का निष्काम कर्म सिद्धांत उम्मीद की एक किरण बनकर सामने आता है। यह सिद्धांत नेताओं को निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने की प्रेरणा देता है। जब नेता अपने निजी स्वार्थों को त्यागकर समाज के हित में काम करेंगे, तो उनके फैसले न केवल संतुलित और न्यायपूर्ण होंगे, बल्कि हर वर्ग के लिए समान रूप से फायदेमंद भी साबित होंगे। निष्काम कर्म राजनीति में शक्ति और नैतिकता के बीच एक गहरा संतुलन स्थापित करता है। यह नेताओं को उनके कर्तव्यों की सच्ची भावना का एहसास कराता है और उन्हें समाज की भलाई के लिए प्रेरित करता है। जब इस सिद्धांत को वास्तविक जीवन में अपनाया जाएगा, तो यह राजनीति को स्वार्थ और भ्रष्टाचार से मुक्त कर, इसे समाज के कल्याण का एक पवित्र माध्यम बना देगा।

समभाव का सिद्धांत :-

गीता में समत्व या समभाव का विशेष महत्व है। यह सिद्धांत बताता है कि सफलता और असफलता, सुख और दुख, हानि और लाभ में समान भाव रखना चाहिए। राजनीति में यह सिद्धांत नेताओं को निष्पक्ष और संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है। समत्व का पालन करने वाला नेता पक्षपात और भेदभाव से मुक्त होकर समाज के सभी वर्गों के लिए समान रूप से कार्य कर सकता है।

धर्म और कर्तव्य का महत्व :-

धर्म और कर्तव्य जीवन के दो ऐसे स्तंभ हैं, जो न केवल व्यक्ति के चरित्र को परिभाषित करते हैं, बल्कि समाज की स्थिरता और प्रगति के लिए भी आवश्यक हैं। गीता में धर्म और कर्तव्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों या परंपराओं का पालन भर नहीं है, बल्कि वह मार्ग है, जो मानव को सही और गलत का भेद समझने में सहायता करता है। धर्म और कर्तव्य का सही अर्थ आत्मा और समाज के कल्याण के लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य करना है। समकालीन समय में, विशेषकर राजनीति में, धर्म और कर्तव्य के मूल सिद्धांतों की अनदेखी हो रही है। सत्ता और स्वार्थ की लालसा ने समाज के प्रति नेताओं की जिम्मेदारी को गौण बना दिया है। गीता का यह संदेश कि "कर्तव्य सर्वोपरि है," आज भी उतना ही प्रासंगिक है। गीता के अनुसार, धर्म का अर्थ केवल पूजा-पाठ या धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि नैतिकता, ईमानदारी, और पारदर्शिता से भरे आचरण में है। यह हमें सिखाता है कि सच्चा धर्म वही है, जो कर्तव्य के पालन के साथ जोड़ा जाए। आज की राजनीति में, जहां व्यक्तिगत लाभ और सत्ता की होड़ समाज को कमजोर कर रही है, गीता का यह संदेश नेताओं को उनकी जिम्मेदारियों का एहसास कराता है। यदि नेता अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करें, तो समाज में एक नई ऊर्जा का संचार हो सकता है। धर्म और कर्तव्य का पालन न केवल राजनीतिक स्थिरता को बनाए रखेगा, बल्कि जनता के विश्वास को भी

मजबूत करेगा। धर्म और कर्तव्य का यह संतुलन न केवल राजनीति, बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। एक व्यक्ति जो अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करता है, वह न केवल अपनी आत्मा को संतुष्टि प्रदान करता है, बल्कि अपने परिवार, समाज और देश के लिए भी आदर्श बनता है। कर्तव्य का पालन आत्म-संयम और निष्ठा की मांग करता है, जो किसी भी इंसान को सच्चा और महान बनाता है। गीता में कहा गया है कि हर व्यक्ति का अपना "स्वधर्म" होता है, जो उसके कर्तव्यों को परिभाषित करता है। इसे समझना और निभाना ही मानव जीवन का उद्देश्य है। जब हर व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन करेगा और धर्म के मार्ग पर चलेगा, तो समाज में शांति, सद्भाव और विकास संभव होगा। अतः धर्म और कर्तव्य का महत्व केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र की उन्नति का भी आधार है। गीता का यह संदेश हमें याद दिलाता है कि सच्चा धर्म वही है, जो मानवता और कर्तव्य के साथ जुड़ा हो। जब हम धर्म और कर्तव्य का पालन करते हैं, तो जीवन की हर चुनौती को स्वीकार करने और उसका सामना करने की शक्ति मिलती है। यही सच्चे अर्थों में मानव जीवन का उद्देश्य और सार है।

धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध :-

धर्म और राजनीति का संबंध मानव सभ्यता के आरंभ से ही जुड़ा हुआ है। दोनों का लक्ष्य समाज को संगठित करना और उसे बेहतर दिशा में ले जाना है। धर्म व्यक्ति को नैतिकता और सही-गलत का ज्ञान देता है, जबकि राजनीति समाज के समुचित संचालन और व्यवस्था का माध्यम है। जब ये दोनों एक साथ चलते हैं, तो समाज में शांति, न्याय और संतुलन बना रहता है। लेकिन जब इनका दुरुपयोग होता है, तो यही संबंध समाज में अस्थिरता और विभाजन का कारण बन जाता है। धर्म का तात्पर्य केवल पूजा-पाठ और कर्मकांड तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ नैतिकता, सत्य, अहिंसा, और मानवता के आदर्शों पर आधारित है। राजनीति, जिसका उद्देश्य समाज की उन्नति और कल्याण है, तभी सफल हो सकती है जब वह धर्म के नैतिक सिद्धांतों का पालन करे। महात्मा गांधी ने भी कहा था कि "धर्म और राजनीति को अलग नहीं किया जा सकता।" उनका मानना था कि राजनीति को धर्म के नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों से प्रेरणा लेनी चाहिए। हालांकि, आधुनिक समय में धर्म और राजनीति का यह संबंध कई बार विकृत रूप में सामने आता है। धर्म का उपयोग राजनीतिक स्वार्थ और सत्ता प्राप्ति के लिए किया जाता है। इससे समाज में सांप्रदायिकता, भेदभाव और संघर्ष बढ़ता है। राजनीति, जो समाज को जोड़ने का माध्यम होनी चाहिए, धर्म के नाम पर विभाजन का कारण बन जाती है। यह स्थिति गीता के उस आदर्श से बिलकुल विपरीत है, जिसमें धर्म और कर्तव्य का पालन निःस्वार्थ भाव से करने की बात कही गई है। गीता हमें सिखाती है कि धर्म का सही अर्थ नैतिकता और कर्तव्य में है। राजनीति में धर्म का उपयोग केवल समाज के कल्याण और न्याय की स्थापना के लिए होना चाहिए। धर्म और राजनीति के बीच संबंध संतुलित तभी हो सकता है, जब धर्म राजनीति को नैतिकता का मार्गदर्शन दे और राजनीति धर्म को मानवता और सेवा का साधन बनाए।

समकालीन समय में धर्म और राजनीति का सही उपयोग समाज को एक नई दिशा दे सकता है। यदि नेता धर्म के आदर्शों को अपनाते हुए निष्ठा और ईमानदारी से समाज की सेवा करें, तो राजनीति स्वार्थ और भ्रष्टाचार से मुक्त हो सकती है। साथ ही, धर्म को राजनीति का आधार बनाते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि यह समाज में विभाजन का कारण न बने। धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध मानवता और नैतिकता के साथ जुड़ा होना चाहिए। दोनों का सही संतुलन समाज को एकजुट कर सकता है और उसकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। गीता का यह संदेश, कि धर्म का उद्देश्य समाज में संतुलन और शांति स्थापित करना है, आज भी उतना ही प्रासंगिक है। जब राजनीति धर्म के नैतिक आदर्शों का पालन करेगी और धर्म राजनीति को सेवा और कल्याण का माध्यम बनाएगा, तभी एक न्यायपूर्ण और सुदृढ़ समाज का निर्माण संभव होगा।

समकालीन समाज की चुनौतियाँ और गीता का समाधान :-

आज के समाज में पर्यावरणीय संकट, आर्थिक असमानता, धार्मिक कट्टरता और नैतिक पतन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इन सभी समस्याओं का समाधान गीता के नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण में निहित है।

पर्यावरण संरक्षण :-

गीता का संदेश प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने पर जोर देता है। गीता के "सत्व" सिद्धांत के अनुसार, जीवन का उद्देश्य प्रकृति और पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखना है। राजनीति में पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देकर गीता के इस संदेश को लागू किया जा सकता है।

सामाजिक न्याय और समानता :-

गीता का "समत्व" सिद्धांत समाज में न्याय और समानता की भावना को प्रोत्साहित करता है। राजनीति में यदि इस सिद्धांत को अपनाया जाए, तो समाज के सभी वर्गों के बीच भेदभाव और असमानता को समाप्त किया जा सकता है।

धार्मिक सहिष्णुता :-

गीता "विविधता में एकता" के सिद्धांत पर आधारित है। यह विभिन्न धर्मों के बीच सम्मान और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा देती है। गीता का यह संदेश समकालीन राजनीति में सांप्रदायिक सौहार्द स्थापित करने के लिए अत्यधिक उपयोगी है।

मानसिक शांति और ध्यान :-

आधुनिक जीवनशैली के कारण लोग मानसिक तनाव और अवसाद से पीड़ित हो रहे हैं। प्रतियोगिता, सफलता की होड़, और सामाजिक अपेक्षाओं का दबाव मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। गीता में "योग" और "ध्यान" का विशेष महत्व है। भगवान कृष्ण अर्जुन को आत्मसंयम, ध्यान, और भक्ति

योग का मार्ग बताते हैं। इन तकनीकों को अपनाकर मानसिक तनाव और अवसाद को कम किया जा सकता है। ध्यान और आत्मचिंतन से व्यक्ति को अपने भीतर शांति और स्थिरता प्राप्त होती है।

गीता में दिए गए नैतिक सिद्धांत, जैसे निष्काम कर्म, समत्व भाव, और स्वधर्म, पर विभिन्न विद्वानों ने शोध किया है। भगवद्गीता के नैतिक दर्शन को समझने के लिए आर.सी. जैन की पुस्तक "Ethics in Bhagavad Gita" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जैन ने गीता के नैतिक संदेश को समकालीन समस्याओं से जोड़ते हुए बताया है कि कैसे निष्काम कर्म सिद्धांत व्यक्ति और समाज को स्वार्थ और लोभ से मुक्त कर सकता है।

महात्मा गांधी ने भी गीता को अपनी प्रेरणा का स्रोत माना। उन्होंने इसे "आध्यात्मिक ग्रंथ" के साथ-साथ "राजनीतिक नैतिकता" का आधार कहा। उनकी आत्मकथा "My Experiments with Truth" में गीता के नैतिक सिद्धांतों का उपयोग सामाजिक और राजनीतिक सुधार के लिए किया गया है।

डा. एस. राधाकृष्णन की पुस्तक "The Bhagavad Gita: A Philosophical Analysis" में गीता को केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में उपयोगी मार्गदर्शिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। राधाकृष्णन का तर्क है कि गीता के सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र में नेतृत्व को नैतिक और न्यायपूर्ण बना सकते हैं।

मानव अधिकारों और सामाजिक समानता के संदर्भ में गीता का समत्व भाव समाज में न्याय और समरसता स्थापित करने में सहायक है। प्रो. अरुण शर्मा ने अपनी पुस्तक "Bhagavad Gita and Social Justice" में गीता के सिद्धांतों को आधुनिक समाज के सामाजिक न्याय से जोड़ा है।

प्रस्तुत है एक कविता

“धर्म और राजनीति का मिलन, गीता ने दिखलाया है,

नैतिकता के पथ पर, चलना हमें सिखलाया है।

शक्ति की राह में, स्वार्थ से दूर रहकर,

कर्म करें हम, निष्काम भाव से, यही गीता ने बताया है।

गुरु श्री कृष्ण ने अर्जुन से यह कहा,

"कर्म करो, फल का न हो ख्वाब, बस यही है सही दिशा बताया/

धर्म की राह में, कोई भी न रुकता,

समभाव से बढ़ो, यही राजनीति का सार है।

स्वधर्म से न भागो, न कर्तव्यों से डरो,

ISSN (O) : 3048-9318
Vol. 1, No. 1, Year 2024
Available Online : https://sanatanodaya.com/

सच्चे नेता वही, जो समाज के लिए चले हर कदम।

न्याय, सत्य, और प्रेम का पालन करें,

मनुष्य का धर्म यही, और राजनीति का कर्म यही।

कभी न देखो स्वार्थ की राह,

समाज की भलाई में ही हो विश्वास।

श्री कृष्ण ने कहा था, यह है सही तरीका,

धर्म और कर्तव्य से ही बनता है मार्ग, जीवन का सटीक तरीका।

गीता का यह संदेश, समय से परे है,

राजनीति में जब धर्म का समावेश हो, तो कोई शंका नहीं रहे।

आज के समाज में, गीता का यह संदेश,

राजनीति और धर्म को जोड़ता है, यही गीता का अद्भुत संदेश।

जब नेता धर्म के रास्ते पर चलेंगे,

सत्य और न्याय का हर कदम बढ़ाएंगे।

समाज का हर हिस्सा समृद्ध होगा,

जब गीता के सिद्धांतों से राजनीति जुड़ जाएगा।

गीता का मार्गदर्शन, हमें यही सिखाता है,

सत्ता का उद्देश्य सेवा होना चाहिए, न कि स्वार्थ का।

जब हम अपने कर्तव्यों को निभाएंगे,

तो राजनीति में नैतिकता का सूरज चमकाएंगे।"

निष्कर्ष

राजनीति में धर्म का समावेश केवल धार्मिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसे नैतिकता, ईमानदारी, और पारदर्शिता के रूप में अपनाया जाना चाहिए। गीता का यह संदेश नेताओं को यह याद दिलाता है कि उनका कर्तव्य समाज की सेवा करना है और इस मार्ग पर चलकर वे न्यायपूर्ण और समावेशी

शासन स्थापित कर सकते हैं। समाज की विभिन्न समस्याओं, जैसे भ्रष्टाचार, असमानता और असहिष्णुता, का समाधान गीता के सिद्धांतों में निहित है। जब नेता अपने कर्तव्यों को निःस्वार्थ भाव से निभाएंगे, तो समाज में समृद्धि और शांति का वातावरण उत्पन्न होगा। गीता का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि महाभारत के समय था। इसका नैतिक दृष्टिकोण राजनीति को एक सही दिशा दिखाता है और समाज के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। अंततः, श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन और इसके सिद्धांतों का पालन समकालीन राजनीति और धर्म में नैतिकता और न्याय की स्थापना में एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। यह हमें यह सिखाती है कि हर कार्य को निःस्वार्थ भाव से, समाज के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए, और यही राजनीति का सही उद्देश्य होना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. जैन, आर.सी. "Ethics in Bhagavad Gita", Philosophical Publications, 2005, New Delhi.

2. गांधी, महात्मा. "My Experiments with Truth", Navajivan Publishing House, 1929, Ahmedabad.

3. राधाकृष्णन, डॉ. एस. "The Bhagavad Gita: A Philosophical Analysis", George Allen & Unwin Ltd., 1948, London.

4. वर्मा, आशुतोष. "Religion and Politics in India", Cambridge University Press, 2010, Cambridge.

5. शर्मा, प्रो. अरुण. "Bhagavad Gita and Social Justice", Social Science Press, 2012, New Delhi.

6. भारतीय, एम. "Role of Dharma in Politics", National Book Trust, 2018, New Delhi.

7. पांडे, विवेक. "Ethical Dilemmas in Contemporary Politics: A Bhagavad Gita Perspective", Ethics Press, 2020, New Delhi.

8. कुमार, संजीव. "Bhagavad Gita in Modern World", Academic Press, 2015, New Delhi.

9. शर्मा, मनोज. "Philosophy of Bhagavad Gita in the Modern Age", Bharatiya Vidya Prakashan, 2016, Delhi.

10. सिंह, राजीव. "Politics and Morality: Relevance of Bhagavad Gita in Today's World", Vishwavidyalaya Publications, 2019, Varanasi.

11. गुप्ता, रितु. "Bhagavad Gita and Environmental Ethics", Springer Publications, 2018, New York.

12. शर्मा, अजय. “धर्म और राजनीति का संबंध.” समकालीन अध्ययन, खंड 15, अंक 3, 2021, पृष्ठ 45-60.